I.G.N.O.U. Based

NEERAJ®

E.P.S.-11

राजनीतिक विचार और विचारधाराएँ

(Political Ideas and Ideologies)

By: *Reena Kushwaha,* M.A., M.Phil (Pol. Science)

***Question Bank Cum Chapterwise Reference Book Including* Many Solved Question Papers**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 240/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajignoubooks.com**
Website: **www.neerajignoubooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only	*Typesetting by:* Competent Computers	*Printed at:* Novelty Printer

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajignoubooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*

To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajignoubooks.com.***

No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.

We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006

Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

CONTENTS

राजनीतिक विचार और विचारधाराएँ
(Political Ideas and Ideologies)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-4
Question Paper—December, 2017 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-5
Question Paper—December, 2016 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2015 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2011 (Solved)	1
Question Paper—June, 2010 (Solved)	1-2

क्रम सं. ***Chapterwise Reference Book*** पृष्ठ

राजनीतिक सिद्धान्त क्या है और इसकी हमें क्यों आवश्यकता है?

1.	राजनीति को समझना	1
2.	राजनीति का सैद्धान्तीकरण	6
3.	राजनीतिक सिद्धान्त की आवश्यकता	12
4.	राजनीतिक सिद्धान्त की संकल्पनाएँ	17
5.	राजनीतिक तर्क और सैद्धान्तिक विश्लेषण	21

क्रम सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	राजनीतिक परम्पराएँ	
6.	भारतीय राजनीतिक परम्पराएँ	25
7.	कन्फ्यूशसवादी परम्पराएँ	30
8.	अरब-इस्लामी राजनीतिक परम्पराएँ	35
9.	यूनानी और रोमन परम्पराएँ	37
10.	पाश्चात्य : उदारवादी और मार्क्सवादी	39
	राज्य को समझना	
11.	राज्य का अर्थ और प्रकृति	43
12.	संप्रभुता	47
13.	राज्य, नागरिक समाज और समुदाय	52
	सत्ता, प्राधिकार और वैधता	
14.	सत्ता और प्राधिकार	55
15.	वैधता	59
16.	राजनीतिक दायित्व और क्रान्ति	64
	अधिकार, समानता, स्वतंत्रता और न्याय	
17.	अधिकार और नागरिकता	72
18.	समानता	81
19.	स्वतंत्रता	86
20.	न्याय	93

क्रम सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	लोकतन्त्र	
21.	प्रत्यक्ष और सहभागी लोकतन्त्र	98
22.	प्रतिनिधि लोकतन्त्र	102
23.	समाजवादी लोकतन्त्र	111
	राजनीतिक विचारधाराएँ	
24.	व्यक्तिवाद और समुदायवाद	121
25.	फासिज़्म	128
26.	मार्क्सवाद	133
27.	गाँधीवाद (धर्म, स्वराज, सर्वोदय और सत्याग्रह)	139
	सामयिक मुद्दे	
28.	राज्य और वैश्वीकरण	144
29.	धर्मनिरपेक्षता	149
30.	विकास	153
31.	वंचित और सकारात्मक कार्य	157

❐❐

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

(June – 2019)

(Solved)

राजनीतिक विचार और विचारधाराएँ

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) खण्ड I–**किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दें। (ii) खण्ड II–**किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर दें। (iii) खण्ड III–**किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दें।*

भाग–I

निम्न में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. Eric Vaeglin और Christian Bay के राजनीति के नये विज्ञान पर विचारों का परीक्षण कीजिये।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-10, प्रश्न 8

प्रश्न 2. प्राधिकार व्यवस्थाओं के मैक्स वेबर प्रकार का (Typology) वर्णन कीजिये।

उत्तर–सत्ता के विभिन्न स्वरूप हैं। यह राजनीतिक, सामाजिक धार्मिक और आर्थिक सभी क्षेत्रों में पाई जाती है। राजनीति में इसका वर्णन दो प्रमुख रूप में मिलता है–(1) राजतन्त्र और (2) लोकतन्त्र। राजतन्त्र के अन्तर्गत शक्ति राजा के हाथ में निहित होती है जबकि लोकतन्त्र में राज्य करने की शक्ति जनता के हाथों में रहती है। जनता अपना प्रतिनिधि लोकतान्त्रिक विधियों द्वारा चुनती है और शासन करने का अधिकार प्रदान करती है। सत्ता शक्ति लोकतान्त्रिक संस्थाओं के बीच बँटी हुई होती है।

जब हम सत्ता के संबंध में बात करते हैं तो एक शब्द को हम इसके नजदीक पाते हैं, वह है प्राधिकार। सत्ता और प्राधिकार की संकल्पनाएँ परस्पर संबंधित हैं किन्तु दोनों के अर्थों में भिन्नता है। प्राधिकार का अर्थ है किसी काम को करने का अधिकार। जैसे शासन करने के अधिकार, कर्मचारियों को हड़ताल करने का अधिकार, आदेश देने का अधिकार। संक्षेप में, विधिसंगत सत्ता प्राधिकार है।

इसे भी देखें–संदर्भ–अध्याय-14, पृष्ठ-57, प्रश्न 4

प्रश्न 3. प्रतिनिधि लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों का वर्णन कीजियं।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-22, पृष्ठ-102-103, 'परिचय'

प्रश्न 4. विकासशील और विकसित देशों के परिप्रेक्ष्य से विश्वीकरण की चर्चा कीजिये।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-28, पृष्ठ-147, प्रश्न 7

भाग–II

निम्न में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 5. राज्य और अन्य संस्थाओं के मध्य विभेद कीजिये।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-44, प्रश्न 2

प्रश्न 6. स्वतंत्रता के कुछ सामयिक विचारों की चर्चा कीजिये।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-89, प्रश्न 5

प्रश्न 7. राज्य की गांधी की संकल्पना की चर्चा कीजिये।

उत्तर–महात्मा गाँधी राज्य सम्बन्धी विषय में नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। वह राज्य को कम-से-कम कार्य सौंपने के पक्ष में थे ताकि व्यक्ति की स्वतंत्रता बनी रहे। राज्य सम्बन्धी विचार के सम्बन्ध में गाँधीजी के विचार *कार्ल मार्क्स* से मिलते-जुलते हैं। मार्क्सवादी सिद्धान्त की भाँति गाँधीवादी सिद्धान्त भी राज्यरहित और वर्गरहित समाज की बात करता है। मार्क्सवाद की भाँति ही वे एक ऐसी समाज-व्यवस्था की माँग करते हैं जिसमें सभी व्यक्ति आनन्दपूर्वक बिना भेदभाव के अपना जीवनयापन कर सकें।

गाँधीजी शासन-शक्ति के केन्द्रीकरण के विरुद्ध हैं। वह शक्ति के विकेन्द्रीकरण की बात करते हैं ताकि राजनीतिक शक्ति कुछ लोगों के हाथों में न होकर टुकड़ों में बँटी हो। शासन-शक्ति समाज की जड़ से लेकर शीर्ष तक फैली हो, इसके लिए वह ग्राम पंचायत की स्थापना पर बल देते हैं। ग्राम पंचायत पूर्ण रूप से लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों पर आधारित होनी चाहिए। आर्थिक क्षेत्र में, गाँधीजी श्रमिक वर्ग की हिस्सेदारी के बारे में चर्चा करते हैं और औद्योगिक संस्थानों में उनकी बराबर भागीदारी पर जोर देते हैं। मार्च 1946 में गाँधीजी ने एक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा था कि अगर कल को भारत स्वतंत्र होता है तो सभी पूँजीवादियों को सर्वाधिक न्यासी बनना होगा। स्वतंत्रता पश्चात् पूँजीपति अपनी योग्यता का उपयोग स्वयं के लिए करने की बजाय राष्ट्र कल्याण के लिए करेंगे। उसके लिए राज्य विनिमय की दर निश्चित करेगा।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

जिसे वे अपनी प्रदत्त सेवा और समाज के मूल्य के अनुरूप प्राप्त करेंगे।

गाँधीजी अपने राजनीतिक सिद्धान्त के अन्तर्गत एक और सिद्धान्त का उल्लेख करते हैं जिसे 'सर्वोदयवाद' के नाम से जाना जाता है। इसका अर्थ है 'सभी का कल्याण'। इसका अर्थ है समाज में सभी के व्यक्तित्व विकास के लिए उचित व्यवस्था। वे सामाजिक सेवा पर बल देते हैं। उनके अनुसार सामाजिक सेवा के माध्यम से व्यक्ति ईश्वर को प्राप्त कर सकता है क्योंकि ईश्वर सभी प्राणियों में निहित है। सर्वोदय का विचार भी रामराज्य से जुड़ा हुआ है। इसका मुख्य उद्देश्य एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना है जिसमें प्रत्येक धर्म, जाति, भाषा, साहित्य और संस्कृति का पूर्ण विकास हो।

प्रश्न 8. सकारात्मक क्रिया (Affirmative Action) से आप क्या समझते हैं ? व्याख्या कीजिये।

उत्तर–सकारात्मक कार्रवाई उन नीतियों का वर्णन करती है जो शिक्षा, रोजगार, या आवास के माध्यम से वंचित समूह के सदस्यों का समर्थन करती हैं, जिन्होंने पिछले भेदभाव का सामना किया है। ऐतिहासिक और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, सकारात्मक कार्रवाई के लिए समर्थन ने रोजगार और वेतन में असमानताएं, शिक्षा तक पहुंच बढ़ाना, विविधता को बढ़ावा देना, और स्पष्ट रूप से अतीत के दोषों, परेशानियों या बाधाओं को दूर करने जैसे लक्ष्यों को प्राप्त करने की मांग की है।

यदि हम साधारण रूप में विश्व के समाज का अध्ययन करें तो पाते हैं कि समाज के कुछ वर्ग सामान्य मानव जीवन के कुछ सुखों से वंचित हैं। वे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक अधिकारों का उतना उपभोग नहीं कर पा रहे हैं जितना कि अन्य वर्ग। इसका मुख्य कारण लोगों के बीच असमानता का होना है। कुछ गरीबी के कारण तो कुछ समाज द्वारा ही प्रतिबंधित हैं। यही हाल विश्व के अन्य देशों का भी है। जो देश गरीब हैं या उनके पास आवश्यकता पूर्ति के लिए पर्याप्त साधन नहीं हैं, वे विकसित देशों पर आश्रित हैं और कई प्रकार की शर्तों से बँधे हुए हैं। उनकी स्वतंत्रता केवल नाममात्र की है। वे अपने राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक अधिकार व स्वतंत्रता का उपभोग अच्छी तरह से नहीं कर पा रहे हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिका, इंग्लैण्ड, रूस आदि जैसे शक्तिशाली देशों का अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं पर प्रभुत्व कायम है। वे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का खुलकर संचालन कर रहे हैं और प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से कमजोर देशों की नीतियों को प्रभावित कर रहे हैं जबकि अन्य देश जिनको अस्थायी सदस्यता प्राप्त है, बोलने का कम अवसर दिया जाता है। कितने देशों को तो सदस्यता प्राप्त ही नहीं है।

इस प्रकार के सामाजिक भेदभाव को मिटाने के लिए विश्व की सभी जागरूक सरकारों ने पहल की और कई प्रकार के कानून बनाए। उदाहरण के लिए, भारत सरकार ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए आरक्षण की व्यवस्था की। महिलाओं को भी उचित अधिकार प्रदान किए गए। सरकारी संस्थाओं में इनके लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई। इस प्रकार भारत सरकार ने समाज सुधार के पक्ष में कई सकारात्मक कार्य किए।

राजनीतिक सिद्धान्त के कई विचारकों ने राज्य सम्बन्धी कार्यों में राज्यों द्वारा किए जाने वाले सकारात्मक कार्य का वर्णन किया है। *एडली* इन सकारात्मक कार्यों को तीन ढाँचों में प्रस्तुत करते हैं–

1. **रंग अंध**–बिना रंगभेद किए लोगों को अवसर प्रदान करना।

2. **अवसर और भेदभाव विरोधी**–अल्पसंख्यकों को समान अवसर प्रदान करना।

3. **सुधार एवं सम्मिलित**–राज्य द्वारा समाज सुधार सम्बन्धी कानून पारित करना।

कुछ विद्वानों का मानना है कि हमें इन सुधारों की आवश्यकता नहीं है। प्रकृति स्वयं न्याय और समानता के सिद्धान्त पर कार्य करती है और न्याय करती है। इस विषय में *स्टेनले कोरेन* कहते हैं कि लोग महसूस करते हैं कि विश्व कुछ इधर-उधर धमाकों के साथ एक सुन्दर स्थान है जहाँ लोग साधारणतः जितनी योग्यता रखते हैं उतना पाते हैं और जितना पाते हैं उतनी की ही वे योग्यता रखते हैं। यह न्याययुक्त विश्व का सिद्धान्त हमारे बाल्यकाल का ही परीक्षण है। जहाँ अच्छे कार्य के लिए पुरस्कृत किया जाता है और बुरे कार्य के लिए दण्ड दिया जाता है। गुणवादी सिद्धान्त के समर्थक मानते हैं कि व्यक्ति की योग्यता के अनुसार उन्हें अवसर प्रदान होना चाहिए क्योंकि सघन परीक्षण के पश्चात् कमजोरी दिखती है। योग्यता के अनुसार व्यक्ति को अवसर प्रदान करने से कार्य क्षमता बढ़ती है। सौंपा गया कार्य उचित ढंग से होता है। उच्च संस्थाओं में पदों पर नियुक्ति निश्चित परीक्षण के बाद की जाती है, जो उचित है।

प्रश्न 9. लोकतंत्र और नागरिक समाज के मध्य सम्बन्ध की चर्चा कीजिये।

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-53, प्रश्न 1

प्रश्न 10. क्रांति से आप क्या समझते हैं ? यह विद्रोह से कैसे भिन्न है ?

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-68, प्रश्न 6

प्रश्न 11. भारत के लिये धर्मनिरपेक्ष के उपयुक्त प्रारूप का परीक्षण कीजिये।

उत्तर–यदि हम भारतीय इतिहास के पन्नों को पलटें तो हम पाते हैं कि भारतीय राजनीति धर्म से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। जितने भी भारतीय राजनीतिक विद्वान व विचारक हुए उन्होंने भारतीय राजनीति और धर्म के बीच घनिष्ठता को स्वीकार

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

राजनीतिक विचार और विचारधाराएँ

राजनीतिक सिद्धान्त क्या है और इसकी हमें क्यों आवश्यकता है?

राजनीति को समझना

1

परिचय

राजनीति विषय का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। इसके क्षेत्रफल को एक निश्चित मापदण्ड के द्वारा निर्धारित नहीं किया जा सकता। यह आज भी अपनी विकसित अवस्था में है। राजनीति के विषय में समय-समय पर विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न मत प्रस्तुत किए हैं किन्तु इनके विचार आपस में नहीं मिलते। आज तक कोई भी राजनीतिक विद्वान राजनीति की सटीक परिभाषा व्यक्त नहीं कर पाया है। कुछ विद्वानों के अनुसार यह राज्य और सरकार से सम्बन्धित है, तो कुछ के अनुसार यह 'शक्ति के लिए संघर्ष' से सम्बन्धित पहलुओं का अध्ययन करने वाला विषय है जबकि कुछ राजनीतिज्ञ यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि राजनीति न केवल राज्य व सरकार का अध्ययन करती है बल्कि उससे जुड़ी सभी गतिविधियों, क्रियाकलापों, संस्थाओं (जैसे–शक्ति, शासन, प्रशासन, सत्ता तथा इससे सम्बन्धित निर्धारित मूल्यों तथा साधनों) इत्यादि का अध्ययन करती है। कुछ लोग राजनीति का सम्बन्ध विशेष रूप से, राजनीतिक दलों के नेताओं की गतिविधियों से जोड़ते हैं।

वास्तव में, राजनीति एक सार्वभौमिक विषय है। राजनीति का राज्य से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। राज्य की शासन-प्रणाली का रूप चाहे जो भी हो, राजनीति किसी-न-किसी रूप में अवश्य विद्यमान रहती है। *मैक्स वेबर* राजनीति का अर्थ बताते हुए कहते हैं कि "सत्ता में भागीदारी के लिए प्रयास करना या राज्यों के अन्तर्गत सत्ता के विभाजन या राज्य के अन्तर्गत समूहों के बीच राजनीति को प्रभावित करने का प्रयास करना है।" राजनीति मानव जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक, सभी पक्षों से जुड़ी होती है। दरअसल, राजनीति मानव-जीवन के सामूहिक आचरण से शुरू होती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समूह में रहना पसंद करता है। सामूहिक जीवन में वह कई प्रकार के सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करता है, जैसे–पति-पत्नी का सम्बन्ध, सास-बहू का सम्बन्ध, व्यवसाय में मालिक-नौकर का सम्बन्ध आदि। यदि हम समाज में विद्यमान मानव के सामाजिक सम्बन्धों का गहन रूप में परीक्षण करें तो हम पाते हैं कि इन सामाजिक सम्बन्धों में भी एक प्रकार की राजनीति विद्यमान है। इस प्रकार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के साथ-साथ एक राजनीतिक प्राणी भी है। इस विषय में, प्रसिद्ध यूनानी विचारक अरस्तू लिखते हैं कि "मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है।" व्यक्ति के इसी स्वभाव ने राज्य की उत्पत्ति की जिसका राजनीति एक प्रमुख अंग है। मनुष्य ने अपने सामाजिक जीवन को सुचारु रूप से नियमित करने के लिए राजनीतिक संस्थाओं का निर्माण किया, जो सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र के लिए कानून बनाती हैं और लोगों के जीवन को नियमित करती हैं जिसे हम 'सरकार' के रूप में जानते हैं। सरकार राजनीतिक शक्ति का प्रयोग शासन चलाने के लिए करती है। इसका मुख्य उद्देश्य देश की रक्षा करना और समाज में रह रहे लोगों के लिए कल्याणकारी कार्यों का प्रतिपादन करना है। इस प्रकार राजनीति का सम्बन्ध शासन व सत्ता शक्ति से भी है।

सत्ता, शक्ति और वैधता राजनीति विज्ञान के मुख्य केन्द्रीय विषय हैं। राज्य शक्ति पर निर्भर करता है। किसी देश की राजनीति कितनी शक्तिशाली और कमजोर है इसका अंदाजा इसकी शक्ति से ही लगाया जाता है। इसीलिए *मारग्येथू* राजनीति का वर्णन करते हुए

www.neerajbooks.com

कहते हैं कि "यह (राजनीति) शक्ति के लिए संघर्ष है।" *मैक्स वेबर* ने राजनीतिक शक्ति के विषय में बतलाते हुए, तीन तरीकों से शक्ति के प्रयोग को उचित ठहराया है; जिनमें पहला है–पारम्परिक वर्चस्व अर्थात् सत्ता शक्ति, व्यक्ति या उसके परिवार में परम्परागत रूप में निहित होती है। जैसे इंग्लैण्ड के राजा तथा उनका परिवार। दूसरा, करिश्माई विधि। इसके अनुसार व्यक्ति में स्वयं इस प्रकार की विलक्षण क्षमता होती है कि लोग उसे अपना नेता मानने लगते हैं। उदाहरण के लिए महात्मा गाँधी। तीसरा, विधिक-तार्किक। इसके अन्तर्गत एक विशेष व्यवस्था के तहत व्यक्ति को शासन करने का अधिकार प्राप्त होता है। *मैक्स वेबर* का तीसरा तरीका विश्व के लगभग सभी राष्ट्रों द्वारा अपनाया गया है।

वर्तमान समय में, राजनीति एक राज्य से उठकर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र तक पहुँच गई है। आज, लोग राष्ट्रीय राजनीति की अपेक्षा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के बारे में ज्यादा चर्चा करते हैं। प्राचीन समय में राजनीति राजमहलों तक ही सीमित थी। इसे केवल राजाओं का खेल माना जाता था, किन्तु आज राजनीति का स्वरूप बदल चुका है। यह अपने राजतन्त्र स्वरूप को त्यागकर लोकतन्त्र का रूप धारण कर चुकी है जिसमें राज्य के सभी व्यक्ति अपने राजनीतिक अधिकारों का प्रयोग स्वतन्त्रतापूर्वक करते हैं। राजनीतिक सत्ता शक्ति जनता द्वारा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में चुने गए प्रतिनिधियों के हाथ में होती है। ये प्रतिनिधि अपने कर्त्तव्यों के लिए जनता के सामने उत्तरदायी होते हैं। इन प्रतिनिधियों द्वारा कर्त्तव्यों व अधिकारों का सही रूप में पालन न करने पर जनता चाहे तो अपने प्रतिनिधियों को एक विशेष व्यवस्था द्वारा अपदस्थ भी कर सकती है। चुनाव प्रणाली द्वारा वह निश्चित समय पर नये-नये प्रतिनिधि चुनती है, जो जनता से किए गए वादों का पूरा करते हैं और देश का शासन सुचारु रूप से चलाते हैं।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि राजनीति आज साधारण व्यक्ति के जीवन का एक अंग बन चुकी है। राजनीति के इस गहरे प्रभाव को देखते हुए *मार्शल वर्मन* लिखते हैं कि "भले ही आप चाहो या न चाहो, भले ही राजनीति में आपकी रुचि न हो, किन्तु राजनीति आप में रुचि अवश्य रखती है।"

बोध-प्रश्न

प्रश्न 1. व्यावहारिक गतिविधि के रूप में राजनीति क्या है?

उत्तर–राजनीति विषय का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। इसकी सीमा को निश्चित मापदण्ड द्वारा नापा नहीं जा सकता। यह अभी भी विकसित अवस्था में है। विभिन्न विद्वानों ने इसके विषय में विभिन्न मत दिए हैं, जो आपस में मेल नहीं खाते हैं। किसी विद्वान ने इसका वर्णन पेशे के रूप में किया है, तो किसी ने व्यावहारिक रूप में। जो विद्वान व्यावहारिक गतिविधि के रूप में राजनीति का वर्णन करते हैं; उनके अनुसार, राजनीति मानव संभावनाओं के संगठन पर संघर्ष है। इस रूप में, यह शक्ति से सम्बन्धित है। यह उन संसाधनों से जुड़ी हुई है, जो इसकी क्षमता को प्रभावित करते हैं और उन शक्तियों के विषय में है, जो इसके प्रयोग को आकार देते हैं। राजनीति निजी और सार्वजनिक जीवन से जुड़े सभी समूहों, संस्थाओं और समाजों में पाई जाती है। इसकी उन समस्त सम्बन्धों, संस्थाओं और संरचनाओं में अभिव्यक्ति होती है, जो सामाजिक जीवन के उत्पादन और पुनः उत्पादन से सम्बन्धित होते हैं।

इस प्रकार व्यावहारिक गतिविधि के रूप में राजनीति मानव जीवन के सभी पक्षों की रचनाओं व उनसे सम्बन्धित शर्तों से जुड़ी हुई है।

प्रश्न 2. राजनीति की आवश्यक प्रकृति की चर्चा करें।

उत्तर–कुछ लोगों के अनुसार 'राजनीति' वह है, जो व्यक्ति समाचार पत्र, पत्रिकाओं में पढ़ता और टेलीविजन पर देखता है। दरअसल 'राजनीतिक' और 'राजनीति' शब्द राजनीतिक गतिविधियों से सम्बन्धित होता है। विद्वान *मारंग्येथू* के अनुसार "राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष है।" *हेरोल्ड लासवेल* के अनुसार "राजनीति प्रभावों और प्रभावित करने वाले तत्त्वों का अध्ययन करती है। राजनीति प्राथमिक रूप से कौन, कब और कैसे पाता है, से सम्बन्धित है।"

राजनीति विज्ञान के आधुनिक विद्वानों के अनुसार राजनीति वह गतिवधि है, जो प्रभाव व प्रभावित तत्त्वों, नीति-निर्माण की प्रक्रिया तथा शक्ति के लिए संघर्ष से सम्बन्ध रखती है। 'राजनीति' के विषय में *आर.एन. वाल* लिखते हैं कि "राजनीति वह गतिविधि है, जो राजनीतिक विवाद, समझौते, नीति-निर्माण, शक्ति और सत्ता से सम्बन्ध रखती है।"

उपरोक्त तत्त्वों व विद्वानों की परिभाषा से पता चलता है कि राजनीति राज्य शासन संबंधी सभी प्रकार के क्रियाकलापों और गतिविधियों से सम्बन्धित है।

राजनीति की आवश्यक प्रकृति निम्नलिखित है–

1. राजनीति एक सामूहिक गतिविधि–राजनीति एक सामूहिक गतिविधि है। यह उन लोगों को अपने में शामिल करती है, जो साधारण सदस्यता या कम-से-कम एक समान भाग्य का सहयोगी होना स्वीकार करते हैं।

2. राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष–राजनीति वास्तव में शक्ति के लिए संघर्ष है। राज्य के अन्दर राजनीतिक दल और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व के राष्ट्र शक्ति के लिए संघर्ष करते दिखाई पड़ते हैं। *इस विषय में, मैक्स वेबर* लिखते हैं कि राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष है।

3. यह मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है–राजनीति मानव-जीवन के सभी पहलुओं–राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक आदि को प्रभावित करती है।

4. राजनीति सामाजिक जीवन का एक अभिन्न अंग है–राजनीति सामाजिक जीवन का एक अभिन्न अंग है। इसको अलग नहीं

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

किया जा सकता। एक जगह पर *अरस्तू* ने भी लिखा है कि "मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है।" मनुष्य के इसी स्वभाव ने राज्य की उत्पत्ति की। राजनीति मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक पक्षों को नियमित करती है।

5. राजनीति विचारों की प्रारम्भिक विविधता को स्वीकार करती है—मनुष्य समूह में रहता है। विभिन्न विषयों पर वाद-विवाद करता है और लोग अपने विचार एक-दूसरे के सामने प्रस्तुत करते हैं। राजनीति लोगों के बीच विभिन्न विषयों पर चल रहे वाद-विवाद तथा उत्पन्न मतभेदों के बीच सामंजस्य स्थापित करती है।

6. राजनीति राज्य और सरकार से सम्बन्धित होती है—राजनीति एक गतिविधि है जिसका सम्बन्ध राज्य-शासन से सम्बन्धित क्रियाकलापों और गतिविधियों से होता है। यह सरकार, जो देश का शासन चलाती है और नीति-निर्माण करती है, से सम्बन्ध रखती है।

7. राजनीति सत्ता का अध्ययन है—डेविड इस्टन के अनुसार, "राजनीति सत्ता और इससे सम्बन्धित निर्धारित मूल्यों के अध्ययन से सम्बन्ध रखती है।"

प्रश्न 3. 'राजनीति' शब्द से आप क्या समझते हैं?

उत्तर—राजनीति का इतिहास उतना ही पुराना है जितना राज्य का। 'राजनीति' शब्द की उत्पत्ति भी वहीं से मानी जाती है जहाँ से राज्य की। वास्तव में, राजनीति ग्रीक शब्द 'पोलिस' (Polis) से बना है, जिसका अर्थ 'नगर-राज्य' होता है। प्राचीन यूनान में छोटे-छोटे नगर-राज्य हुआ करते थे, जो व्यक्ति नगर-राज्य के कार्यों में हिस्सा लेते थे, उन्हें नागरिक अधिकार प्राप्त थे। ग्रीक दार्शनिकों के अनुसार, व्यक्ति अपना सम्पूर्ण विकास राज्य के अन्दर ही रहकर कर सकता है।

राजनीति के सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार यह शक्ति के लिए संघर्ष से सम्बन्धित पहलुओं का अध्ययन करने वाला विषय है, तो कुछ के अनुसार यह राज्य और सरकार से सम्बन्धित है।

कुछ प्रमुख विद्वानों ने राजनीति को परिभाषित करने की कोशिश की है, जो इस प्रकार है—

1. *मैक्स वेबर* के अनुसार, "राजनीति का अर्थ, सत्ता में भागीदारी के लिए प्रयास करना या राज्यों के अन्तर्गत सत्ता के विभाजन या राज्य के अन्तर्गत समूहों के बीच राजनीति को प्रभावित करने का प्रयास करना है।"
2. *मारंग्येथू* के अनुसार, "राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष है।"
3. *कैटलिन* के अनुसार, "राजनीति संगठित मानव समाज के राजनीतिक पक्षों का अध्ययन करती है।"
4. *हेरोल्ड लासवेल* के अनुसार, "राजनीति प्रभाव और प्रभावित करने वाले का अध्ययन है। राजनीति प्राथमिक रूप से कौन, क्या, कब और कैसे पाता है, से सम्बन्धित है।"

निष्कर्षत: उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि राजनीति राज्य और शासन-सत्ता से सम्बन्धित सभी प्रकार के क्रियाकलापों व गतिविधियों से सम्बन्धित होती है।

प्रश्न 4. रैल्फ मिलिबैंड के राज्य संबंधी विचारों का वर्णन करें।

उत्तर—*रैल्फ मिलिबैंड* ने अपने राज्य सम्बन्धी विचार अपनी पुस्तक 'पूंजीवाद समाज में राज्य' में प्रस्तुत किए हैं। *रैल्फ मिलिबैंड* राज्य में विद्यमान उन सभी विभिन्न तत्त्वों को स्वीकार करते हैं, जो एक साथ मिलकर राज्य का निर्माण करते हैं; जैसे—

1. सरकार—बहुमत प्राप्त राजनीतिक दल सरकार का गठन करती है। इसके हाथ में देश की वास्तविक शासन-शक्ति विद्यमान होती है। यह पूरे देश के लिए कानून बनाती है और उसे लागू करती है।

2. प्रशासनिक तत्त्व—सरकार को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रशासनिक संस्थाओं की स्थापना होती है। प्रशासनिक अधिकारी सरकार से सम्बन्धित सभी प्रकार के कार्यभार संभालते हैं। कुछ लोग इन्हें स्थायी सरकार के नाम से जानते हैं। प्रशासनिक अधिकारी कुशल, सम्बन्धित कार्यों में दक्ष एवं चतुर व्यक्ति होते हैं। सरकार के नीति-निर्माण से सम्बन्धित कार्य इन्हीं के द्वारा किए जाते हैं।

3. कार्यपालिका—राज्य के निर्माण के प्रमुख तत्त्वों में एक कार्यपालिका है। कार्यपालिका राज्य की वह संवैधानिक संस्था है जहाँ पर कानून बनाने तथा नीति-निर्माण से सम्बन्धित कार्य किए जाते हैं।

4. सेना और पुलिस बल—राज्य की सीमा सुरक्षा के लिए केन्द्रीय सरकार सेना और पुलिस की व्यवस्था करती है। सेना का कार्य बाह्य सीमा की रक्षा करना होता है। जबकि पुलिस आन्तरिक सामाजिक सुरक्षा का कार्यभार संभालती है।

5. न्यायपालिका—सरकार संविधान के अनुसार कानून बना रही है या नहीं, लोगों के अधिकार सरकार द्वारा सुरक्षित हैं या नहीं, यह देखना न्यायपालिका का कार्य है। सरकार द्वारा पारित कानून आदि संविधान के अनुकूल नहीं हैं, तो न्यायपालिका इसे अवैध घोषित कर सकती है।

6. स्थानीय स्व-शासन—संसदीय लोकतन्त्र प्रणाली में पंचायती राज्य की व्यवस्था होती है। यह व्यवस्था लोकतान्त्रिक सिद्धान्त के आधार पर कार्य करती है। इसका प्रमुख वयस्क मताधिकार द्वारा चुना जाता है।

7. प्रतिनिधि सभाएँ—संसदीय लोकतन्त्र प्रणाली में संसद नामक एक राजनीतिक संस्था की व्यवस्था होती है जहाँ पर राज्य और सरकार से सम्बन्धित सभी प्रकार के कार्य किए जाते हैं। संसद के दो विभाग होते हैं—राज्यसभा और लोकसभा। विश्व के अन्य देशों, जहाँ पर संसदीय प्रणाली की व्यवस्था है, वहाँ पर इसके विभाग को विभिन्न नामों द्वारा सम्बोधित किया जाता है।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि *रैल्फ मिलिबैंड* ने राज्य निर्माण के उन सभी आवश्यक तत्त्वों का वर्णन किया है, जो संसदीय लोकतांत्रिक गणराज्य में विद्यमान होते हैं।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रश्न 5. 'राजनीति एक पेशे के रूप में' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर–राजनीतिक विद्वान *मैक्स वेबर* ने अपनी कृति 'राजनीति एक पेशे के रूप में' में राजनीति की व्याख्या की है। इनके अनुसार एक पेशे के रूप में राजनीति राजनीतिक संघों, संस्थाओं तथा राज्य से सम्बन्ध रखती है, जो देश के राजनीतिक क्रियाकलापों व गतिविधियों का संचालन करती है और देश व समाज की रक्षा के लिए बाह्य तथा आन्तरिक मामलों से सम्बन्धित कानून का निर्माण करती है। इस प्रकार राजनीति मानव के सामुदायिक जीवन को नियमित व नियन्त्रित करने वाले साधनों व यन्त्रों से सम्बन्धित है। *मैक्स वेबर* एक पेशे के रूप में, राजनीति का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि "राजनीति सत्ता में भागीदारी के लिए प्रयास करना या राज्यों के अन्तर्गत शक्ति के विभाजन या राज्य के भीतर विद्यमान समूहों के बीच राजनीति को प्रभावित करने का प्रयास करना है।"

संक्षेप में, राजनीति एक पेशे के रूप में, राज्य और सरकार तथा इससे सम्बन्धित क्रियाकलापों व गतिविधियों का अध्ययन करती है। यह सरकार तथा इससे सम्बन्धित सभी प्रकार के तत्त्वों के बारे में हमें विस्तृत जानकारी प्रदान करती है।

प्रश्न 6. वैधता क्या है? मैक्स वेबर के इसके सम्बन्ध में क्या विचार हैं?

उत्तर–राजनीतिक विद्वान वैधता को राजनीति विज्ञान का मुख्य केन्द्रीय विषय मानते हैं। वास्तव में, वैधता से हमारा तात्पर्य उन विधियों से है, जिनके द्वारा सत्ताधारी अपनी सत्ता को उचित ठहराते हैं। वैधता सत्ता को परखने में सहायता प्रदान करती है। यह हमें बताती है कि सरकार या सत्ता संविधान के कानून के अनुसार कार्य कर रही है या नहीं। सरकार द्वारा बनाया गया कानून विधिसंगत है या अवैध, यह वैधता द्वारा ही पता किया जा सकता है। सत्ता का कौन-सा रूप उचित है, यह वैधता ही निर्धारित करती है। दूसरे शब्दों में, वैधता सत्ता-शक्ति पर नियन्त्रण रखने का एक कुशल साधन है।

मैक्स वेबर ने इस संबंध में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सत्ता के तीन रूपों को उचित ठहराया है, ये हैं–

1. पारंपरिक वर्चस्व–इसके अनुसार व्यक्ति को सत्ता-शक्ति वंशानुगत रूप में प्राप्त होती है। सत्ता सदैव उनमें (सत्ताधारी) या उनके परिवार के हाथों में विद्यमान होती है। सत्ताधारी परंपरागत मान्यताओं व परम्पराओं तथा रीति-रिवाजों के कानूनों के अनुसार शासन करता है।

2. करिश्माई विधि–इसके अन्तर्गत, व्यक्ति चाहे भले ही साधारण परिवार से ताल्लुक रखता हो किन्तु उसमें विलक्षण योग्यता विद्यमान होने के कारण वह देश की शासन-सत्ता का कार्यभार संभालता है। लोग उसकी विलक्षण योग्यता से प्रभावित होकर सहर्ष उसे अपना नेता स्वीकार कर लेते हैं और उसके आदेशों का पालन करते हैं।

3. विधिक-तार्किकता–इस विधि के अनुसार व्यक्ति को सत्ता-शक्ति का अधिकार एक प्रतियोगी परीक्षा पास करने के बाद दिया जाता है। पहले तर्क-वितर्क द्वारा व्यक्ति की योग्यता व कुशलता का परीक्षण किया जाता है और योग्य होने पर उसे एक निश्चित क्षेत्र का कार्यभार सौंप दिया जाता है जिससे वह व्यक्ति उस क्षेत्र के अधिकारी के रूप में जाना जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि *मैक्स वेबर* ने वैधता के आधार पर सत्ताधारी के तीन रूपों का वर्णन किया है, जो राज्य के शासन चलाने के लिए कुशल व उत्तम हैं।

प्रश्न 7. अवैधता क्या है?

उत्तर–अवैधता का प्रयोग विधिसंगता के विपरीत किया जाता है, जो कार्य संविधान या प्रचलित कानून के अनुसार नहीं होता है, उसे अवैध घोषित किया जाता है। अवैधता का अर्थ है–मान्य न होना। दूसरे शब्दों में, अवैधता वह प्रक्रिया है जिसमें किसी शासन प्रणाली के प्रमुख विचारों की निरन्तर आलोचना की जाती है। उदाहरण के लिए, जब जर्मन जनसंख्या के एक बड़े भाग ने प्रजातान्त्रिक शासनकाल में विश्वास खो दिया था और साम्यवादी विकल्प के भय से हिटलर की राष्ट्रीय-साम्यवादी पार्टी को अपना समर्थन दिया तो इसके परिणामस्वरूप बिना कोई अधिक संघर्ष किए वाइमर गणतन्त्र का पतन हो गया। संक्षेप में, अवैधता के अन्तर्गत, जो शक्ति की विद्यमान संरचना को उचित ठहराते हैं, उसकी आलोचना की जाती है।

प्रश्न 8. सहमति को कैसे दक्षतापूर्ण बनाया जाता है?

उत्तर–मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज और समूह के सदस्य के रूप में पृथ्वी पर निवास करता है। विभिन्न विषयों पर वाद-विवाद करता है और अन्ततः सम्बन्धित विषय के संदर्भ में निष्कर्ष तक पहुँचता है। साधारणतः देखा गया है कि समाज में रहने वाले सभी व्यक्तियों का मानसिक स्तर एक-सा नहीं होता है जिसके परिणामस्वरूप उनके विचारों में विभिन्नता पाई जाती है। राजनीति इन्हीं विभिन्न विचारों के बीच सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करती है और सहमति को दक्षतापूर्ण बनाती है।

दूसरे शब्दों में, राज्य द्वारा शक्ति का इस प्रकार से प्रयोग किया जाना चाहिए कि एक समान और लोकप्रिय मानसिकता उत्पन्न हो सके। जब लोग एकजुट होकर बिना किसी आपत्ति व विवाद के राज्य द्वारा लिए गए निर्णय पर अपनी सहमति प्रकट करते हैं, तो इस प्रकार स्वतः ही सहमति दक्षतापूर्ण बन जाती है। जैसे ऐसा नाजी जर्मनी में गोयबेल्स की प्रचार मशीन का उद्देश्य था। किसी भी प्रकार के सर्वसत्तावादी शासन का प्रमुख उद्देश्य भी यही रहता है।

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. वैधानिक सत्ता से आप क्या समझते हैं?

उत्तर–वैधानिक सत्ता का तात्पर्य उस सत्ता से है, जो विधिसंगत होती है। समाज और राज्य में प्रचलित मान्यताओं व प्रथाओं के अनुरूप होती है। संसदीय लोकतन्त्र प्रणाली में सत्ता की वैधता का

www.neerajbooks.com